उनतीस

कलीसिया का उठाया जाना और अन्तिम समय

The Rapture and End Times

यीशु ने इस पृथ्वी पर मानव रूप में चलते हुए, अपने शिष्यों को स्पष्ट रूप में यह बताया कि वह अलग होकर एक दिन उनके पास फिर लौट आएगा। वापस लौटने पर वह उन्हें अपने साथ स्वर्ग ले जाएगा (जिसे आधुनिक मसीही 'उठाया जाना' कहते हैं)। उदाहरण के लिये, अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले की रात्रि में यीशु ने अपने ग्यारह विश्वासयोग्य प्रेरितों से कहा:

> तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, *तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा,* कि जहां मैं रहूं, वहां तुम भी रहो (यूह. 14:13, पर बल दिया गया है)।

यीशु के इन शब्दों से उसकी अपने ग्यारह शिष्यों के जीवनकाल में ही लौटने की संभावना लगती है। वास्तव में, जो कुछ यीशु ने कहा उसे सुनने के पश्चात् उन्होंने यह मान लिया था कि वह उनके जीवन काल में ही लौट आएगा।

यीशु ने अपने शिष्यों को अपनी वापसी के समय में *तैयार* रहने को बार-बार सावधान किया, जो कि फिर से उनके जीवनकाल में उसके लौटने की संभावना को दिखाता है (उदाहरण के लिए देखें मत्ती 24:42-44)।

यीशु की पत्रियों में वापसी

Jesus' Imminent Return in the Epistles

नये नियम की पत्रियों को लिखने वाले प्रेरितों ने निश्चय ही अपने विश्वास की पुष्टि की कि यीशु पहली शताब्दी के पाठकों के जीवन काल में लौट सकता है। उदाहरण के लिये, याकूब ने लिखा:

> सो हे, भाइयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो, देखो, गृहस्थ पृथ्वी की बहुमूल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो, और अपने हृदय को दृढ़ करो, *क्योंकि प्रभु का शुभागमन निकट है* (याकू. 5:7-8, पर बल दिया गया है)।

याकूब को अपने पाठकों को उस बारे में धीरज रखने का उपदेश देने का कोई अर्थ नहीं होता जो चीज़ उनके जीवन काल में नहीं हो सकती। तौभी, उसने विश्वास किया कि प्रभु का आगमन निकट है। प्रासंगिक रूप में, याकूब ने उस समय लिखा जब कलीसिया सताव का सामना कर रही थी (देखें याकू. 1:2-4)। एक ऐसा समय जब विश्वासी अपने प्रभु की वापसी की इच्छा करते।

इसी तरह से, पौलुस ने निश्चय ही यह विश्वास किया कि यीशु अपने समकालिकों के जीवन काल में लौट सकता है:

> हे भाइयो, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो; ऐसा न हो, कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसा ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि *हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे,* तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं वे पहले जी उठेंगे। *तब हम जो जीवित और प्रभु में बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें,* और इस रीति से सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शांति दिया करो (1 थिस्स. 4:13-18 पर बल दिया गया है)।[72]

---

72. पौलुस की इस धारणा को दिखाने वाले कुछ अन्य पवित्रशास्त्रीय पद जो उसके समकालिकों के जीवन काल में उसकी वापसी की संभावना को दिखाते हैं, फिलि. 5:20; 1 थिस्स. 3:13; 5:23; 2 थिस्स. 2:1-5; 1 तीमु. 6:14-15; तीतु. 2:11-13; इब्रा. 9:28।

इससे हम यह भी सीखते हैं कि यीशु के स्वर्ग से लौट आने पर, मृत विश्वासियों की देह पुनरुत्थित होकर उन विश्वासियों के साथ मिलकर जो उसके लौट आने तक जीवित रहेंगे ''प्रभु से हवा में मिलने को उठा लिये जाएंगे।'' क्योंकि यीशु ने यह भी कहा कि यीशु वह स्वर्ग से उन लोगों के साथ लौटेगा जो ''उसमें होकर'' मरे। हम केवल यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उस समय में, स्वर्गीय विश्वासियों की आत्माएं अपनी पुनरुत्थित देहों को प्राप्त करेंगी।

पतरस ने यह भी विश्वास किया कि मसीह का आना निकट है:

> इस कारण अपनी बुद्धि की कमर बान्धकर, और *सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलने वाला है-- सब बातों का अन्त तुरन्त होने वाला है;* इसलिए संयमी होकर प्रार्थना के लिए सचेत रहो.... पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो आनन्द करो, *जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो* (1पत. 1:13; 4:7,13, पर बल दिया गया है)।[73]

अन्त में, यूहन्ना ने कलीसियाओं को पत्र लिखते समय भी यह विश्वास किया कि अन्त निकट है और यह भी कि उसके पाठक संभवत: यीशु की वापसी को देखेंगे:

> हे लड़कों, *यह अन्तिम समय है*, और जैसा तुम ने सुना है, कि मसीह का विरोधी आनेवाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं; इससे *हम जानते हैं, कि यह अन्तिम समय है.* .. निदान हे बालकों, उस में बने रहो, कि जब वह *प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों* .... हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! *इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।* और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है (1यूह. 2:18, 28; 3:2-3, पर बल दिया गया है)।

उसका विलम्ब
His Delay

पिछले 2000 वर्षों की ओर देखने पर हम यह जान पाते हैं कि यीशु की वापसी

73. पतरस की धारणा को संकेत देने वाले अन्य पद जो यीशु को दिखाते हैं-2पत. 1:15-19; 3:3-15

प्रेरितों की आशा अनुसार नहीं हुई। उनके दिनों में भी कुछ आरम्भ से ही यह संदेह करनेवाले थे कि यीशु के उठाए जाने के पश्चात् काफी समय बीतने पर उसकी वापसी होगी या नहीं। पतरस के दुनियावी जीवन की समाप्ति के निकट होने पर (देखें 2पत. 1:13-14) भी यीशु की वापसी नहीं हुई थी, इसी कारण पतरस ने अपने अन्तिम पत्र में संदेहपूर्ण विचारों को रखनेवालों से कहा:

> और यह पहले जान लो, कि अन्तिम दिनों में हंसी ठट्ठा करने वाले आएंगे, जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे। और कहेंगे ''उसके आने की प्रतिज्ञा कहां गई? क्योंकि जब से बाप-दादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है, जैसा सृष्टि के आरम्भ से था?'' वे तो जान बूझकर यह भूल गए, कि परमेश्वर के वचन के द्वारा आकाश प्राचीनकाल से वर्तमान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है। इन्हीं के द्वारा उस युग का जगत जल में डूब कर नाश हो गया। पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसी लिये रखे हैं, कि जलाए जाएं; और वह भक्तिहीन मनुष्य के न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे। हे प्रियो, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है, और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर है। प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो; वरन यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले। परन्तु आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे (2 पत. 3:3-10)।

पतरस ने इस बात की पुष्टि की कि यीशु द्वारा विलम्ब किया जाना उसके प्रेम और करुणा को दिखाता है– वह लोगों को पश्चात्ताप करने के लिए अधिक समय देना चाहता है। लेकिन उसने इस बात की भी पुष्टि की कि यीशु की वापसी पर कोई संदेह नहीं है। वह बड़े रोष में होकर आएगा।

जैसा हम आगे देखेंगे, पवित्रशास्त्र इस बारे में अधिक स्पष्ट है कि यीशु की रोषपूर्ण वापसी विश्वव्यापी रूप में अद्वितीय सताव और दुष्टों पर परमेश्वर के क्रोध के उगले जाने के वर्षों पश्चात् होगी। प्रकाशितवाक्य पुस्तक का अधिकांश विषय भविष्य के उस समय को आवृत्त करता है। जैसा हम बाद में अपने अध्ययन में देखेंगे, पवित्रशास्त्र इस बात का संकेत देता है कि भावी सताव के सात वर्ष होंगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि कलीसिया का उठाया जाना इन सात वर्षों के आस-पास ही होगा।

कलीसिया का उठाया जाना वास्तव में कब होना है?

When Exactly Does the Rapture Occur?

मसीहियों को विभाजित करनेवाला एक प्रश्न यह है कि उठाए जाने का सही समय कौन सा है। कुछ कहते हैं कि यह सताव के सात वर्षों से पूर्व होगा और इसी कारण यह किसी भी समय में हो सकता है। दूसरों का कहना है कि यह सात वर्ष के सताव की अवधि के मध्यम में होगा, अन्यों का कहना है कि यह सताव अवधि में किसी भी समय पर होगा और इसी के साथ-साथ कुछ का कहना है कि सताव के अन्त पर यीशु की रोषपूर्ण वापसी के समय में कलीसिया का उठया जाना होगा।

यह विषय निश्चय ही विभाजित करनेवाला नहीं है, और सभी चारों वर्गों को यह स्मरण रखना चाहिए कि कलीसिया का उठाया जाना भावी सात वर्षों में या उनके आस-पास की अवधि में होगा। अत:, अपनी असहमतियों पर विभाजित होने के बजाय, हमारे लिये अच्छा होगा कि अपनी सहमतियों में आनन्द मनाएं और चाहे हम में से प्रत्येक का विश्वास कैसा भी क्यों न हो, जो कुछ होने वाला है उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।

मैं आपको अपने मसीही जीवन के प्रथम पच्चीस वर्षों के बारे में बताना चाहता हूं, मेरा मानना था, कि कलीसिया का उठाया जाना सताव के सात वर्षों से पहले होगा। मुझे जो सिखाया गया था उस पर विश्वास करने के कारण मैं उस पर विश्वास नहीं करना चाहता था जो मैंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पढ़ा था। तौभी, पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने पर मैंने एक भिन्न दृष्टिकोण को अपनाना आरम्भ कर दिया था। अत:, आइए इस पर एक दृष्टि डालें कि बाइबल क्या कहती है और यह भी देखें कि क्या परिणाम निकाला जा सकता है। चाहे मैं आपको अपने वर्ग में न ला पाऊं, तौभी हमें एक दूसरे से प्रेम करना है।

जैतून का उपदेश

The Olivet Discourse

आइये मत्ती के सुसमाचार के 24वें अध्याय पर विचार करने के द्वारा आरम्भ करें, पवित्रशास्त्र का एक ऐसा खण्ड जो अन्त समय में होनेवाली घटनाओं और यीशु की वापसी के संबंध में मूल आधार है। मत्ती के 25वें अध्याय के साथ इसे *जैतून के उपदेश* के रूप में जाना जाता है क्योंकि इन दोनों अध्यायों में यीशु द्वारा जैतून पर्वत पर अपने घनिष्ठ शिष्यों को उपदेश दिये जाने का विवरण है।[74] इसे पढ़ने पर हम अन्त समय में घटने वाली बहुत सी समस्याओं के बारे में जान पाएंगे और हम इस

74. मरकुस 13:3 उपस्थित चार के नाम देता है: पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास। हम जैतून के उपदेश का विवरण मरकुस 13:1-37 और लूका 21:5-36 में भी पाते हैं। लूका 17:22-37 में भी इसी तरह की जानकारी का वर्णन है।

पर भी विचार करेंगे कि यीशु के जिन शिष्यों को यह उपदेश दिया गया था, उन्होंने कलीसिया के उठाए जाने के विषय में क्या परिणाम निकाला होगा:

> जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था तो उसके चेले उसको मन्दिर की रचना दिखाने के लिए उसके पास आए। उसने उनसे कहा, ''क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूं, यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।'' और जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था, तो चेलों ने अलग उसके पास आकर कहा, ''हम से कह कि ये बातें कब होंगी? और तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?'' (मत्ती 24:1-3)।

यीशु के शिष्य भविष्य के बारे में जानना चाहते थे। वे विशिष्ट रूप से यह जानना चाहते थे कि मन्दिर की इमारत को कब ढाया जाएगा (जैसा यीशु ने उन्हें पहले से बताया था), और उसकी वापसी तथा युग के अन्त के चिन्ह क्या होंगे।

इसका सिंहावलोकन करते हुए हम जान पाते हैं कि 70वीं ई. तक मन्दिर की इमारत को सेनापति टाइटस और रोमी सेना द्वारा नष्ट कर दिया गया था। हम यह भी जानते हैं कि यीशु अपनी कलीसिया को एकत्रित करने के लिए अभी तक नहीं लौटा है। अत: ये दोनों घटनाएं बहुत कठिनाई से ही समकालिक हैं।

यीशु द्वारा उनके प्रश्नों का जवाब दिया जाना

Jesus Answers Their Questions

ऐसा लगता है कि मत्ती ने यीशु द्वारा मन्दिर की इमारत के भावी विनाश के विषय में पूछे गए प्रश्न के उत्तर का विवरण नहीं दिया है, जबकि लूका ने अपने सुसमाचार में ऐसा किया है (देखें लूका 21:12-24)। मत्ती के सुसमाचार में, यीशु ने तत्काल ही उन चिन्हों के बारे में बोलना आरम्भ किया जो उसकी वापसी और युग के समापन पर घटेंगे।

> यीशु ने उनको उत्तर दिया, ''सावधान रहो। कोई *तुम्हें* भरमाने पाए। क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे कि मैं मसीह हूं; और बहुतों को भरमाएंगे। *तुम* लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा, क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा और जगह-जगह अकाल पड़ेंगे, और भूईंडोल होंगे। ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी (मत्ती 24:4-8, पर बल दिया गया है)।

इस संदेश के आरम्भ से यह स्पष्ट हो जाता है कि यीशु ने यह विश्वास किया

कि उसके प्रथम शताब्दी के शिष्य उन घटनाओं के समय में भी जीवित रहेंगे जो उसकी वापसी के चिन्ह होंगी। ध्यान दें कि उसने कितनी बार व्यक्तिगत सर्वनाम *तुम* का प्रयोग किया। यीशु ने 24वें अध्याय में ही *तुम* सर्वनाम का प्रयोग कम से कम 20 बार किया है, अत: उसके सभी श्रोताओं ने यह विश्वास किया होगा कि वे उस समय तक जीवित रहेंगे।

बेशक, हम जानते हैं कि यीशु की ओर से इसे सुननेवाला प्रत्येक शिष्य बहुत समय पहले ही मर चुका है। तौभी, हमें यह परिणाम नहीं निकालना चाहिए कि यीशु उन्हें धोखा दे रहा था, बल्कि यह कि वह वास्तव में अपनी वापसी के सही समय के बारे में नहीं जानता था (देखें मत्ती 24:36)। यह उनके लिए बिल्कुल असंभव था जिन्होंने उसके जैतून उपदेश को सुना था कि उसकी वापसी तक जीवित रहें।

यीशु की सबसे पहली चिन्ता यह थी कि उसके शिष्य झूठे मसीह द्वारा भरमाए न जाएं जो कि अन्त के दिनों में उठ खड़े होंगे। हम जानते हैं कि मसीह विरोधी स्वयं एक झूठा मसीह होगा, जो अधिकांश संसार को धोखा देगा। वे उसे अपना अद्‌भुत उद्धारकर्त्ता मानेंगे।

यीशु ने कहा कि अकाल, युद्ध और भूईंडोल होंगे, लेकिन उसने संकेत दिया कि ये घटनाएं उसकी वापसी के चिन्ह *नहीं* हैं, बल्कि ये केवल ''पीड़ाओं का आरम्भ होंगी।'' यह कहना सुरक्षित होगा कि ये चिन्ह पिछले दो हज़ार वर्षों से घट रहे हैं। तौभी, यीशु ने बाद में जिसके बारे में बताया वह अभी नहीं घटा है।

विश्वव्यापी सताव का आरम्भ

Worldwide Tribulation Begins

> तब वे क्लेश दिलाने के लिए *तुम्हें* पकड़वाएंगे, और *तुम्हें* मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग *तुम* से बैर रखेंगे। तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे और एक दूसरे से बैर रखेंगे। और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे। और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा। परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा (मत्ती 24:9-14, पर बल दिया गया है)।

पुन: जिन्होंने उस दिन यीशु से इसे सुना था, यदि आप उनसे पूछते, ''क्या आप आशा करते हैं कि इन चीज़ों को पूरा होते देखने के लिए आप जीवित रहेंगे?'' तो वे निश्चय ही सकारात्मक जवाब देते। यीशु व्यक्तिगत सर्वनाम *तुम* का प्रयोग कर रहा था।

जैसा हमने पढ़ा, ''पीड़ाओं के उत्पन्न'' होने के पश्चात् एक ऐसी घटना घटेगी जो अभी तक नहीं घटी है, मसीहियों पर सताव का एक अभूतपूर्व समय। ''*सभी जातियां*'' *या* ''*सभी* सांप्रदायिक समूह या गोत्र'' हमसे घृणा करेंगे। यीशु एक ऐसे विशिष्ट समय के बारे में बोल रहा था जब यह घटित होना था, न कि सैकड़ों वर्षों के बाद एक सामान्य समय के बारे में, क्योंकि उसने अगले ही वाक्य में कहा, ''तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे और एक दूसरे से बैर रखेंगे।''

उसका कथन निस्संदेह मसीही विश्वासियों के भटकने के बारे में बताता है, जो कि इस समय अन्य विश्वासियों से घृणा करेंगे, क्योंकि गैर-विश्वासी ''भटक'' नहीं सकते और वे पहले से ही एक दूसरे से बैर रखते हैं। अत: विश्वव्यापी सताव के आरम्भ होने पर, मसीह के पीछे चलने का दावा करनेवाले पथभ्रष्ट हो जाएंगे। चाहे वे सच्चे या झूठे विश्वासी, भेड़ या बकरियां हों– बहुत से भटक जाएंगे, और वे बदले में सतानेवाले अधिकारियों पर अन्य विश्वासियों की सच्चाई को प्रगट करेंगे, उनसे बैर रखते हुए जिनसे कभी उन्होंने प्रेम करने की साक्षी दी थी। परिणामस्वरूप, संसार भर में कलीसिया का शुद्धिकरण होगा।

तब झूठे भविष्यद्वक्ता भी उठ खड़े होंगे, जिनमें से एक का वर्णन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मसीह विरोधी के रूप में किया गया है (देखें प्रका. 13:11-18; 19:20; 20:10)। लोगों के हृदयों से प्रेम छीन लिया जाएगा और पापी अधिक निरंकुश हो जाएंगे।

शहीद व जीवित बचे हुए
Martyrs and Survivors

यद्यपि यीशु ने पहले से बता दिया कि विश्वासी अपने जीवनों को खोएंगे (देखें 24:9) क्योंकि उसने प्रतिज्ञा की है कि जो अन्त तक धीरज रखेगा वही बचाया जाएगा। (देखें 24:13)। अर्थात्, यदि वे झूठे मसीह या झूठे भविष्यवक्ताओं से धोखा नहीं खाते और अपने विश्वास को भटकाने व छुड़ानेवाली परीक्षा का सामना करते हैं तो वे उस समय मसीह द्वारा बचाए जाएंगे जब वह आसमान में उन्हें अपने साथ ले जाने आएगा। भविष्य के इस सताव व बचाव के समय को दानिय्येल पर भी प्रगट किया गया था, जिसे पहले से बताया गया था:

> तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ होगा; परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे। और जो भूमि के नीचे सोए

> रहेंगे उनमें से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये (दानि. 12:1-2)।

उन दिनों में भी उद्धार को अनुग्रह के साथ दिया जाएगा, क्योंकि यीशु ने प्रतिज्ञा की है कि सुसमाचार सभी जातियों को सुनाया जाएगा (सांप्रदायिक समूहों या गोत्रों को), पश्चात्ताप करने का एक अन्तिम अवसर देते हुए, और उसके बाद अन्त आ जाएगा।[75] प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जो हम पढ़ते हैं उसकी पूर्ति यीशु की प्रतिज्ञा में अच्छी तरह से हो सकती है:

> फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा, जिसके पास पृथ्वी पर के रहनेवालों की हर एक *जाति, और कुल, और भाषा और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था।* और उसने बड़े शब्द से कहा, ''परमेश्वर से डरो; और उसकी महिमा करो; *क्योंकि उसके न्याय का समय आ पहुंचा है;* और उसका भजन करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए''(प्रका. 14:6-7, पर बल दिया गया है)।

कुछ का सोचना है कि उस समय स्वर्गदूत द्वारा घोषणा किये जाने का कारण यह है कि वर्षों के सताव के समय में उठाया जाना हो गया होगा और सभी विश्वासी चले गए होंगे। लेकिन यह केवल अनुमान ही है।

मसीह-विरोधी

The Antichrist

भविष्यवक्ता दानिय्येल पर प्रगट किया गया कि सताव के उन सात वर्षों में मसीह-विरोधी पुनर्निर्माण किये यरूशलेम के मन्दिर में स्थान लेकर स्वयं को परमेश्वर घोषित करेगा (देखें दानि. 9:27; जिसका अध्ययन हम बाद में करेंगे)। अपने जैतून के उपदेश में यीशु के मस्तिष्क में इसी तरह की घटना का विचार था:

> सो जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यद्धक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्रस्थान में खड़ी देखो, (जो पढ़े, वह समझे) तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं। जो कोठे पर हो, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे। और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती

75. यह प्रतिज्ञा प्राय: इसके संदर्भ को खीचंती है, और ऐसा बार-बार कहा गया है कि यीशु के लौट आने से पहले हमें विश्व सुसमाचार-प्रचार के कार्य को पूरा कर लेना चाहिए। लेकिन इस संदर्भ के अन्तर्गत इस प्रतिज्ञा को समस्त संसार पर अन्त से पहले सुसमाचार की घोषणा के रूप में बोला जा रहा है।

> होंगी, उनके लिये हाय, हाय। और प्रार्थना किया करो; कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े। क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा।[76] और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे (मत्ती 24:15-22)।

यीशु द्वारा सताव के बारे में पहले से बताए जाने के संबंध में यह एक विशिष्ट विस्तार है (देखें 24:9)। मसीह विरोधी द्वारा यरूशलेम के मन्दिर में स्वयं को परमेश्वर घोषित किये जाने पर यीशु में पाए जाने वाले विश्वासियों के विरुद्ध एक अकाल्पनिक सताव का आरम्भ होगा। स्वयं को परमेश्वर घोषित करने में मसीह विरोधी की आशा यह होगी कि हर कोई उसके ईश्वरत्व को स्वीकार करें। परिणामस्वरूप, मसीह के सभी सच्चे अनुयायी उसके विरुद्ध होने पर मार दिये जाएंगे। इसी कारण यीशु ने यहूदिया के विश्वासियों से बिना बिलम्ब किये पहाड़ों पर भाग जाने को कहा, यह प्रार्थना करते हुए कि उनके बचाव में किसी तरह की कोई बाधा न आए।

मेरा मानना है कि इस घटना के होने पर संसार भर के विश्वासियों को पिछड़े क्षेत्रों की ओर भाग जाना चाहिए। पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि समस्त संसार मसीह विरोधी के धोखे में आ जाएगा, उसे अपना मसीह मानते हुए वे उसके साथ सहमत होंगे। उसके द्वारा स्वयं को परमेश्वर घोषित किये जाने पर वे उस पर विश्वास कर उसकी आराधना भी करेंगे। सच्चे परमेश्वर-मसीहियों के परमेश्वर– की निन्दा करते हुए वह समस्त संसार को उनसे घृणा करने को प्रभावित करेगा जो उसकी आराधना करने से इंकार करेंगे (देखें प्रका. 13:1-8)।

यीशु ने सताव के उन दिनों को छोटा करने के द्वारा अपने लोगों को छुटकारा दिलाने की प्रतिज्ञा की है, अन्यथा "किसी भी प्राणी का जीवन नहीं बचता" (24:22)। चुने हुओं के कारण उसका "दिनों को कम किया जाना" आकाश में उसके प्रगट होने और उन्हें एकत्रित करने का एक संदर्भ हो सकता है। तौभी, यीशु ने हमें यह नहीं बताया कि मसीह विरोधी द्वारा अपने ईश्वरत्व की घोषणा किये जाने के कितने समय पश्चात् उसका छुटकारा आएगा।

एक बार फिर हम इस पर ध्यान दें कि उस दिन यीशु ने अपने श्रोताओं को इस छाप के साथ छोड़ा था कि वे मसीह विरोधी द्वारा अपने ईश्वरत्व की घोषणा किये जाने और मसीहियों के विरुद्ध होने वाले युद्ध तक जीवित रहने पाएंगे। यह उनके प्रतिकूल है जो इस तरह से कहते हैं कि इस घटना के होने से पहले विश्वासी स्वर्ग

76. यदि कुछ के अनुसार कलीसिया का उठाया जाना सात वर्ष की इस सताव अवधि से पहले होना है, तो यीशु का विश्वासियों से ऐसा कहने का कोई अर्थ नहीं होगा कि अपने जीवनों को बचाने के लिए भाग जाएं, क्योंकि वे तो उठा लिए गए होंगे।

में उठा लिये जाएंगे। यदि आपने पतरस, याकूब और यूहन्ना से पूछा होता कि क्या यीशु उन्हें मसीह विरोधी द्वारा अपने ईश्वरत्व की घोषणा किये जाने से पूर्व बचाने को वापस आएगा तो उनका जवाब निश्चय ही यह होता, ''बिल्कुल नहीं।''

धर्मी जनों के विरुद्ध युद्ध
War Against the Saints

पवित्रशास्त्र विश्वासियों पर मसीह विरोधी के सताव के बारे में अन्य स्थानों पर भी बताता है। उदाहरण के लिए, इसे यूहन्ना पर प्रगट किया गया था, जबकि उसने इसका विवरण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दिया:

> और बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिये उसे (मसीह विरोधी को) एक मुंह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया। और उसने परमेश्वर की निन्दा करने के लिये मुंह खोला, कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात् स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे। *और उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए,* और उसे हर एक कुल और लोग, और भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया (प्रका. 13:5-7, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि मसीह-विरोधी को बयालीस महीनों या साढ़े तीन वर्ष तक ''कार्य करने का अधिकार'' दिया जाएगा। यह सताव के सात वर्षों का आधा समय है। यह सोचना उचित प्रतीत होता है कि मसीह विरोधी को दिये गए ये अन्तिम बयालीस माह होंगे जब उसे ''कार्य करने का अधिकार'' दिया जाएगा, क्योंकि सताव के अन्त पर यीशु की वापसी के समय में उसके अधिकार को पूरी तरह से ले लिया जाएगा।

निस्संदेह बयालीस महीनों तक ''कार्य करने का यह अधिकार'' *विशिष्ट* रूप में उस समय के संदर्भ में हो सकता है जब वह धर्मी जनों पर विजयी होता है, क्योंकि दानिय्येल की पुस्तक में हम पढ़ते हैं:

> और मैंने देखा कि वह सींग (मसीह-विरोधी) पवित्र लोगों के संग लड़ाई करके उन पर उस समय तक भी प्रबल हो गया, जब तक वह अति प्राचीन (परमेश्वर) न आया, और परमप्रधान के लोग न्यायी न ठहरे, और उन पवित्र लोगों के राज्यधिकारी होने का समय न आ पहुंचा... और वह (मसीह-विरोधी) परमप्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा, और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा और समयों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा;

वरन साढ़े तीन काल तक वे सब उसके वश में कर दिये जाएंगे
(दानि 7:21-22, 25, पर बल दिया गया है)।

दानिय्येल ने बताया कि धर्मी जनों को मसीह विरोधी के हाथों में 'एक समय, समयों और आधे समय'' के लिये दे दिया जाएगा। प्रकाशितवाक्य 12:6 और 14 के अनुसार इस गूढ़ वाक्यांश का अनुवाद ''*साढ़े तीन वर्ष*'' के रूप में किया जाना चाहिए। प्रकाशितवाक्य 12:6 में हमें बताया गया है कि एक प्रतीकात्मक स्त्री को 1260 दिनों तक जंगल में छिपकर पलने के लिए स्थान दिया जाएगा, जो कि साढ़े तीन वर्ष का समय बनता है। तब, आठ पदों के पश्चात् ही, उसके बारे में फिर से बोला गया, और यह कहा गया कि उसे जंगल में पलने के लिए ''समय, समयों और आधे समय'' के लिए स्थान दिया गया। अत: ''समय, समयों या आधा समय' 1260 दिनों या साढ़े तीन वर्षों के समानान्तर है।

अत:, इस संदर्भ में ''समय'' शब्द का अर्थ ''*वर्ष*'' और ''समयों'' का अर्थ ''*दो वर्ष*'' और ''आधा समय'' से अभिप्राय ''*आधे वर्ष*''से है। प्रकाशितवाक्य 12:14 में पाई जानेवाली यह असाधारण अभिव्यक्ति दानिय्येल 7:21 के समान ही है। अत:, हम यह जान पाते हैं कि धर्मी जनों को साढ़े तीन वर्ष के लिए मसीह विरोधी के हाथ में सौंपा जाएगा, प्रकाशितवाक्य 13:5 में बताया गया वही समय जब मसीह विरोधी को ''कार्य करने का अधिकार'' दिया जाएगा।

मेरे विचार से बयालीस महीनों की यह अवधि समय की मौलिक अवधि है। यदि उनका आरम्भ सताव के सात वर्षों के मध्य में मसीह विरोधी द्वारा ईश्वरत्व की घोषणा किये जाने से होता है, तब धर्मी जनों को साढ़े तीन वर्षों के लिए मसीह विरोधी को सौंप दिया जाएगा, और यीशु आसमान में प्रगट होने पर उन्हें छुटकारा देगा और सताव के सात वर्षों के आस-पास वह उन्हें इकट्ठा करेगा। तौभी, यदि उन बयालीस महीनों का आरम्भ सताव के सात वर्षों में दूसरे बिन्दु पर होता है, तब हम यह परिणाम निकाल सकते हैं कि कलीसिया उठाया जाना सताव के सात वर्षों के अन्त से पूर्व होगा।

बाद की दो संभावनाओं के साथ कठिनाई यह है कि संतों के मसीह विरोधी के हाथों सौंपे जाने से *पूर्व* उनका खतरे में होना और उसके द्वारा अपने ईश्वरत्व की घोषणा किये जाने पर उनके पहाड़ों की ओर भाग जाने की ज़रूरत तर्कहीन प्रतीत होता है।

पहले की दो संभावनाओं के साथ कठिनाई यह है कि इससे ऐसा प्रतीत होगा कि धर्मी जन परमेश्वर के महाप्रलय और विश्वव्यापी न्याय के समय में भी पृथ्वी पर होंगे जैसा हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पढ़ते हैं। इस कठिनाई पर हम बाद में विचार करेंगे।

अब जैतून के उपदेश की ओर लौटते हैं।

झूठे मसीहा
False Messiahs

आगे यीशु अपने शिष्यों को झूठे मसीहों से पथभ्रष्ट न होने के महत्व के बारे में विस्तार से बताते हैं:

> उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि ''देखो मसीहा यहां है! या वहां है'' तो प्रतीति न करना। क्योंकि झूठे मसीहा और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्‌भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। देखो, मैंने पहले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है। इसलिये यदि वे तुम से कहें, ''देखो, वह जंगल में है'' तो बाहर न निकल जाना; ''देखो, वह कोठरियों में है,'' तो प्रतीति न करना। क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा। जहां लोथ हों वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे (मत्ती 24:23-28)।

एक बार फिर से यीशु द्वारा व्यक्तिगत सर्वनाम *तुम* के प्रयोग किये जाने पर ध्यान दें। जैतून पर्वत के उसके श्रोताओं ने झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ताओं की अपने जीवन काल में देखने की अपेक्षा की होगी जो कि महान चमत्कार करते, और उन्होंने यीशु के आसमान से बिजली के चमकने के समान लौटने की भी अपेक्षा की होगी।

निस्संदेह, उस समय विश्वासियों के पथभ्रष्ट हो जाने का खतरा बड़ा होगा क्योंकि उनके विरुद्ध सताव बहुत भयंकर होगा और झूठे मसीहा व झूठे भविष्यवक्ता अपने चमत्कारों के द्वारा उन्हें विवश करेंगे। इसी कारण यीशु ने अपने शिष्यों को बार-बार उस बारे में सावधान किया जो उसकी वापसी से पूर्व होना है। वह नहीं चाहता था कि वे भी बहुतों के समान पथभ्रष्ट हों। सच्चे और अटल विश्वासी यीशु के आसमान से बिजली के चमकने के समान लौट आने की प्रतीक्षा करेंगे जबकि जो उसके सच्चे अनुयायी नहीं हैं वे झूठे मसीहा की ओर उसी तरह खींचे चले जाएंगे जिस तरह से गिद्ध जंगल में लोथ की ओर खिंचे चले जाते हैं।

आकाश में चिन्ह
Signs in the Sky

यीशु ने आगे कहा:

> उन दिनों के क्लेश के बाद तुरन्त सूर्य अन्धियारा हो जाएगा और चांद का प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और

> आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी। तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे (मत्ती 24:29-31)।

यीशु के जैतून के उपदेश के इस भाग के प्रतिरूप से उन दिनों के यहूदी परिचित रहे होंगे, क्योंकि इन प्रतिरूपों के बारे में यशायाह और योएल संसार के अन्त पर परमेश्वर के अन्तिम न्याय के विषय में बताते हैं, जिसे प्राय: ''प्रभु का दिन'' कहा जाता है, जब सूर्य और चांद अन्धियारे हो जाएंगे (देखें यशा. 13:10-11; योएल 2:31)। तब संसार के सभी वासी यीशु को आकाश में अपनी महिमा के साथ लौटते देखेंगे, और वे विलाप करेंगे। तब यीशु के स्वर्गदूत ''आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे,'' यह संकेत देते हुए कि विश्वासी यीशु से मिलने को हवा में एकत्रित होंगे, और ऐसा तुरही के बड़े शब्द से होगा।

पुन:, यदि आपने जैतून के उपदेश के समय पतरस, याकूब या यूहन्ना से यह प्रश्न किया होता कि यीशु-मसीह विरोधी या सताव के समय से पहले से या बाद में – उनके लिए आएगा, तो उनका जवाब निश्चित रूप से यह होता ''बाद में।''

वापसी और कलीसिया का उठाया जाना

The Return and the Rapture

जैतून के उपदेश का यह भाग उस घटना से परिचित है, जिसके बारे में पौलुस ने लिखा जो निस्संदेह कलीसिया का उठाया जाना है, तौभी जिसके बारे में बहुत से टिप्पणीकर्त्ताओं का कहना है कि यह सताव की अवधि के आरंभ होने से *पूर्व* होना है। निम्नलिखित पदों पर विचार करें जिसका इस अध्याय में हम पहले भी परीक्षण कर चुके हैं:

> हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो, ऐसा न हो कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा, क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और *प्रभु के आने* तक बचे रहेंगे, तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि *प्रभु*

> *आप ही स्वर्ग से उतरेगा;* उस समय ललकार, और प्रधानदूत का शब्द सुनाई देगा, और *परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी,* और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, *उसके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें,* और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शांति दिया करो। पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन नहीं, कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए। क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसे ही *प्रभु का दिन* आनेवाला है। जब लोग कहते होंगे, कि ''कुशल है! और कुछ भय नहीं'', तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा। जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे (1 थिस्स. 4:13-5:3 पर बल दिया गया है)।

पौलुस ने परमेश्वर की तुरही के साथ, यीशु के आने और विश्वासियों के 'बादलों में प्रभु से मिलने' के बारे में लिखा। यह उसी के समान है जिसके बारे में मत्ती 24:30-31 में यीशु बता रहा था, जो कि मसीह विरोधी और सताव के उत्थान के बाद होगा।

इसके अतिरिक्त, यीशु की वापसी के बारे में लिखते हुए पौलुस ने यह भी वर्णन किया कि यह कब होगा ''समयों और काल'' को, और वह अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि वे पहले से जानते हैं कि ''प्रभु का दिन उसी के समान आएगा जैसे एक चोर रात में आता है।'' पौलुस ने विश्वास किया कि मसीह की वापसी और विश्वासियों का उठाया जाना 'प्रभु के दिन'' में होगा, वह दिन जब भयंकर विनाश उन पर आ पड़ेगा जो ''शांति और सुरक्षा'' की आशा करेंगे। मसीह के द्वारा अपनी कलीसिया को लेने के लिए आने पर, उसका क्रोध संसार पर पड़ेगा।

यह उसके समानान्तर है जो पौलुस ने मसीह की रोषपूर्ण वापसी के संबन्ध में थिस्सलुनीकियों के पत्र में लिखा था:

> क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है, कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे। और तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; *उस समय जबकि प्रभु यीशु* अपने सामर्थी दूतों के साथ धधकती हुई आग में *स्वर्ग से प्रकट होगा।* और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा;

> क्योंकि तुमने हमारी गवाही की प्रतीति की (2 थिस्स. 1:6-10, पर बल दिया गया है)।

पौलुस ने बताया कि जब यीशु थिस्सलुनीके के सताव पाए मसीहियों को विश्राम देने के लिए लौटेगा (देखें 1 थिस्स. 1:4-5), तब वह ''अपने सामर्थी दूतों के साथ धधकती हुई आग में प्रगट होगा'', उन्हें क्लेश देने को जिन्होंने उन्हें क्लेश दिया। यह उसके समान नहीं लगता जिसका वर्णन बहुत से सताव से पूर्व उठाए जाने के रूप में करते हैं, जबकि कलीसिया को सात वर्ष के सताव समय के आरम्भ होने से *पूर्व* मसीह के द्वारा उठा लिया जाएगा, जिसका सामान्यता मसीह के गुप्त प्रगटीकरण के रूप में वर्णन किया जाता है। नहीं, यह मत्ती 24:30-31 में यीशु के द्वारा बताए गए के अनुसार है, उसकी वापसी सताव अवधि के अन्त पर या उसके आस-पास होगी, जब वह विश्वासियों को लेकर गैर-विश्वासियों पर अपने क्रोध को उण्डेलेगा।

प्रभु का दिन
The Day of the Lord

उसी पत्र में बाद में पौलुस ने लिखा:

> हे भाइयो, *हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास इकट्ठे होने के विषय में* तुम से विनती करते हैं कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि *प्रभु का दिन* आ पहुंचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए; और न तुम घबराओ (1 थिस्स. 2:1-2)।

सर्वप्रथम, ध्यान दें कि पौलुस का विषय-मसीह की वापसी और उठाया जाना था। उसने मत्ती 24:31 में यीशु द्वारा प्रयुक्त किये गए शब्दों का प्रयोग करते हुए हमारे उसके साथ ''इकट्ठे होने' होने के बारे में लिखा जब वह उन स्वर्गदूतों के बारे में बोला जो उसके चुने हुओं को ''आकाश के इस छोर से उस छोर तक'' इकट्ठे करेंगे।

दूसरा, ध्यान दें कि पौलुस ने उन दिनों की समानता ''प्रभु के दिन'' से की जैसा उसने 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-5:2 में किया था। यह अधिक संभावित नहीं हो सकता।

इसके बाद पौलुस आगे कहता है:

> किसी रीति से किसी के धोखे में न आना, क्योंकि *वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो,* जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहां तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने

> आप को परमेश्वर प्रगट करता है (1 थिस्स. 2:3-4, पर बल दिया गया है)।

थिस्सलुनीके के मसीही प्रभु के दिन के बारे में पथभ्रष्ट हो गए थे, जिसका पौलुस के अनुसार उठाए जाने और मसीह की वापसी के साथ आरंभ होना है, पहले से ही हो चुका है। लेकिन पौलुस ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह धर्म त्याग के होने के पश्चात् (संभवत: जिसके बारे में यीशु मत्ती 24:10 में बोला था) और मसीह विरोधी के यरूशलेम के मन्दिर में अपने ईश्वरत्व को घोषित करने के पश्चात् तक नहीं होगा। अत:, पौलुस ने थिस्सलुनीके के विश्वासियों को स्पष्ट रूप से बताया कि उन्हें तब तक मसीह की वापसी, उठाया जाना, या प्रभु के दिन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए जब तक कि मसीह विरोधी अपने ईश्वरत्व की घोषणा न करे दे।[77]

इसके बाद पौलुस मसीह की वापसी और मसीह विरोधी के विनाश की घोषणा करता है:

> क्या तुम्हें स्मरण नहीं, कि जब मैं तुम्हारे यहां था, तो तुम से ये बातें कहा करता था? और अब तुम उस वस्तु को जानते हो जो उसे रोक रही है, कि वह अपने ही समय में प्रगट हो। क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए, वह रोके रहेगा। तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा। उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ और चिन्ह और अद्‌भुत काम के साथ। और नाश होने वाले के लिए अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिससे उनका उद्धार होता (2 थिस्स. 2:5-10)।

पौलुस ने कहा कि मसीह विरोधी का अन्त ''उसके (यीशु के) आगमन के तेज से होगा।'' यदि उसका यह ''आगमन'' पहले के नौ पदों में वर्णन किये गए के अनुसार उठाए जाने के समय में होनेवाले आगमन के समान है (देखें 2:1), कलीसिया हवा में प्रभु से मिलने को इकट्ठी होगी। तब मसीह विरोधी का अन्त उसी समय में ही जाएगा जब इसके समर्थन के लिए प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 और 20 में विवरण

---

77. यह इस सिद्धांत को अस्पष्ट करता है कि जैतून के उपदेश में यीशु द्वारा कहे गए शब्द केवल उन यहूदी विश्वासियों पर ही कार्यान्वित होते हैं जिन्होंने सताव की अवधि में नया जन्म पाया क्योंकि सताव से पूर्व नया जन्म पाने वाले तो पहले से ही उठा लिए गए होंगे। नहीं, पौलुस ने थिस्सलुनीके के विश्वासियों को बताया कि उनका उठाया जाना और मसीह की वापसी तब तक नहीं होगी जब तक कि मसीह विरोधी स्वयं के ईश्वर होने का दावा न कर दे जो सताव के सात वर्षों की अवधि के बीच होना है।

है। वहां हम मसीह की वापसी (देखें प्रका. 19:11-16), मसीह विरोधी और उसकी सेना के विनाश (देखें 19:17-21), शैतान के बांधे जाने (देखें 20:1-3) और'' प्रथम पुनरुत्थान'' के बारे में पढ़ते हैं (देखें 20:4-6), जिसमें सात वर्षों के पीड़ा के समय में शहीद हुए विश्वासी फिर से जीवित होंगे। यदि यह इस भाव में सच में प्रथम पुनरुत्थान है कि यह धर्मियों का प्रथम सामान्य पुनरुत्थान है, तब इस बारे में बहुत कम संदेह है कि कलीसिया का उठाया जाना और मसीह की क्रोधपूर्ण वापसी मसीह विरोधी के विनाश के साथ-साथ होगी, जैसा पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से बताता है कि वे जो मसीह में मरे हैं उठाए जाने के समय शारीरिक रूप से जी उठेंगे (देखें 1 थिस्स. 4:15-17)।[78]

तैयार रहना
Being Ready

आइये एक बार पुन: जैतून के उपदेश की ओर लौटें:

> ''अंजीर के पेड़ से यह दृष्टांत सीखो: जब उसकी डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है। इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो, कि वह निकट है, वरन द्वार ही पर है।[79] मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी। आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी'' (मत्ती 24:32-35)।

यीशु ने नहीं चाहा कि उसके शिष्य सुरक्षा से अज्ञात रहें, जो जैतून के उपदेश का प्राथमिक विषय था। उन्हें यह जानना था कि जब वे ''इन सब चीज़ों को होता देखें'' तो वे जान लें कि ''वह (यीशु) आनेवाला है''– विश्वव्यापी क्लेश, धर्म-त्याग, बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ताओं और मसीहाओं का उत्थान, मसीह विरोधी का ईश्वर होने की घोषणा और उसकी (यीशु की) वापसी के समय की निकटता पर सूर्य और चन्द्रमा के अंधकारमय होने के साथ-साथ सितारों का टूट कर गिरना।

तथापि, उन्हें प्रत्यक्ष रूप से उन चिन्हों के बारे में बताने के पश्चात् जो कुछ वर्षों

78. कुछ का कहना है कि प्रकाशितवाक्य 20:4-6 में बताया गया यह पुनरुत्थान वास्तव में *प्रथम* पुनरुत्थान के *दूसरा भाग* है, वह पुनरुत्थान जो उठाए जाने पर मसीह की *प्रथम* वापसी पर हुआ था। लेकिन इस व्याख्या का क्या अर्थ है? यदि प्रकाशितवाक्य 20:4-6 का पुनरुत्थान वास्तव में दूसरा पुनरुत्थान है, तो इसे ''दूसरा पुनरुत्थान'' क्यों नहीं कहा गया?

79. उन दिनों यीशु की सुननेवालों ने यह सोचा होगा कि उनकी पीढ़ी इन सब चीज़ों को देख सकेगी, हम जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ। अत: 24:34 में यीशु के शब्दों का यह अर्थ निकालना चाहिए कि ये सभी चीज़ें एक ही पीढ़ी में होंगी, या शायद मसीहियों की (यूहदी) जाति जैसा पीढ़ी शब्द का कई बार अनुवाद किया जाता है। उन चीज़ों के होने तक समाप्त नहीं होगी।

महीनों या दिनों में उसके आगमन पर होंगे, उसने इसके बाद उन्हें बताया कि उसकी वापसी का *बहुमूल्य* समय रहस्य बना रहेगा।

> उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता; न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता (मत्ती 24:36)।

कितनी ही बार इस पद को इस संदर्भ में उद्धृत किया जाता है। इसे सामान्यता इस धारणा के समर्थन में उद्धृत किया जाता है कि हम इस बारे में नहीं जानते कि यीशु की वापसी कब होगी, क्योंकि वह किसी समय लौटकर कलीसिया को अपने साथ लेकर जा सकता है। तथापि इस संदर्भ के अंतर्गत, यीशु का अभिप्राय केवल इतना ही नहीं था इस बारे में आश्वस्त होने का एक प्रयास किया था कि अपने शिष्यों को अपनी वापसी के चिन्ह बताने के द्वारा जो कि उसकी वापसी से कुछ पहले ही होंगे, वह उन्हें उसके लिए तैयार कर सके। अब वह उन्हें स्पष्ट रूप से बताता है कि सही समय और दिन को उन पर प्रगट नहीं किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, निस्संदेह यीशु इस परिच्छेद में क्लेश के सात वर्षों के आरम्भ होने से पूर्व अपनी *प्रथम* वापसी के बारे में नहीं कह रहा था, जब कलीसिया को संभवत: रहस्यात्मक रूप में उठा लिया जाएगा बल्कि उसकी वापसी पर या क्लेश के अन्त पर। यदि इस संदर्भ को ईमानदारी से देखा जाए तो यह विवादास्पद नहीं है।

उसकी वापसी-एक पूर्ण आश्चर्य?
His Return-A Complete Surprise?

एक ऐसा तर्क जिसका क्लेश के अन्त पर या उसके निकट उठाए जाने के विचार के विरुद्ध प्रयोग किया जाता है कि यीशु ने कहा कि उसकी वापसी पर आश्चर्य नहीं होगा जैसा यीशु ने (संभावित रूप में) कहा कि यह होगा, क्योंकि इस तरह की वापसी क्लेश की घटनाओं से जुड़ी हो सकती है। उनका कहना है कि क्लेश से पूर्व उठाया जाना होना चाहिए, अन्यथा विश्वासियों को उस तरह से सजग या तैयार होने की ज़रूरत नहीं होगी जैसा पवित्रशास्त्र कहता है कि उन्हें होना चाहिए, यह जानते हुए कि यीशु की वापसी से पूर्व यह सात वर्ष या उससे अधिक का समय हो सकता है।

तथापि, इस विरोध के विरुद्ध सच्चाई यह है कि यीशु के जैतून उपदेश का समस्त विषय यह आश्वस्त कराना था कि उसके शिष्य क्लेश के समय के अन्त पर या उसके निकट तैयार रहें और उसने उन पर अंसख्य चिन्ह प्रगट किये जो उसके आगमन से पूर्व होंगे। जैतून के उपदेश में तैयार और सजग रहने के इतने अधिक शब्दों को क्यों दिया गया है जबकि यीशु यह जानता था कि उसके इन शब्दों के बोलने के समय से उसकी वापसी का समय कई वर्षों की देरी का होगा? *इसके अतिरिक्त यीशु ने यह माना कि उसकी वापसी में कई वर्ष का समय होने*

पर भी मसीहियों को तैयार व सजग रहने की ज़रूरत है। अपनी पत्रियों में यीशु के आगमन के लिए विश्वासियों को तैयार व सजग रहने की शिक्षा देने वाले प्रेरित भी केवल यीशु की नकल कर रहे थे।

इसके अतिरिक्त, जो यह मानते हैं कि क्लेश के समय से पूर्व उठाया जाना तैयार रहने की शिक्षा को सही ठहराता है, उनकी दूसरी समस्या है। उनके अनुसार, मसीह की प्रथम वापसी क्लेश के सात वर्षों के अन्त से पूर्व होनी है। अत: यीशु की प्रथम वापसी *किसी* भी समय में नहीं हो सकती है– यह क्लेश के सात वर्षों के अन्त से पूर्व होनी चाहिए। अत: वास्तव में, यह अपेक्षा करने की कोई ज़रूरत नहीं है कि यीशु की वापसी संसार में क्लेश के सात वर्षों के आरम्भ होने से पूर्व तक नहीं होगी, वे घटनाएं जिन्हें निश्चय ही जाना जा सकता है।

क्लेश पूर्व उठाए जाने का समर्थन करने वाले, यदि ईमानदारी से कहें तो इस तरह से कहेंगे कि यीशु आज संसार के राजनैतिक कारणों की वजह से आज या कल में नहीं लौटेगा। अभी ऐसी घटनाओं की घोषणा की जानी बाकी है जो क्लेश के आरम्भ होने से पूर्व पूरी होंगी। उदाहरणस्वरूप, हम जल्द ही दानिय्येल की पुस्तक से सीखेंगे कि मसीह विरोधी इस्राएल के साथ सात वर्षों की वाचा को बान्धेगा जो कि क्लेश के आरम्भ का चिन्ह होगा। अत: यदि उठाया जाना क्लेश के सात वर्षों से पूर्व होता है, तो यह उस समय होना चाहिए जब मसीह विरोधी इस्राएल के साथ सात वर्षों की वाचा को बान्धता है। तब तक राजनैतिक क्षितिज पर कुछ ऐसी चीज़ होगी जो इस दृश्य को संभव बनाएगी कि क्लेश पूर्व उठाये जाने का समर्थन करनेवालों को यह अपेक्षा करने की ज़रूरत नहीं है कि यीशु वापस आएगा।

इसके अलावा क्लेश पूर्व उठाए जाने के समर्थक जो यह मानते हैं कि यीशु क्लेश के *अन्त* पर आएगा, इसका अर्थ यह है कि यीशु के दूसरे आगमन का सही सही हिसाब लगा लिया गया है। एक बार कलीसिया का उठाया जाना होने पर जिसके बारे में यीशु ने कहा कि केवल पिता ही जानता है, उसका हिसाब आगे के सात वर्षों की गणना करके लगाया जा सकता है।

पुन:, यीशु ने वास्तव में जो कहा, उसने यह नहीं चाहा कि उसकी वापसी एक पूर्ण आश्चर्य होगा। वास्तव में, उसने इसे क्लेश की कुछ घटनाओं के साथ जोड़ना *चाहा* था। सरल रूप से कहा जाए, यीशु ने अपने शिष्यों को असुरक्षित रखना नहीं चाहा, जैसा कि संसार होगा। उसने अपने जैतून के उपदेश में आगे कहा:

> जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। क्योंकि जैसे जल प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज़ पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें ब्याह शादी होती थी, और जब तक जल-प्रलय आकर उन सबको बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा,

> वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा। और दूसरा छोड़ दिया जाएग। दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।[80] इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा, तो जागता रहता; और अपने घर में सेंध लगने न देता। इसलिए तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा (मत्ती. 24:37-44)।

पुन:, यीशु की संभावित चिन्ता यह थी कि उसके शिष्य उसकी वापसी के लिए तैयार रहें, जो कि वास्तव में उसके द्वारा अपने जैतून के उपदेश में इस संदर्भ से पूर्व या पश्चात् प्रत्येक चीज़ के लिए प्राथमिक कारण था। *उनके लिए तैयार व सजग रहने के उसके बहुत से उपदेश इस बात का संकेत नहीं हैं कि उसकी वापसी एक पूर्ण आश्चर्य होगा, बल्कि इस बात का संकेत हैं कि तैयार व सजग बने रहने के लिए समय के अधीन रहना कितना कठिन होगा।* इस तरह से वे जो किसी भी समय में क्लेश पूर्व उठाए जाने की अपेक्षा कर रहे हैं, उनका सोचना है कि वे अन्य मसीहियों की तुलना में अधिक तैयार हैं, जबकि संभवत: वे उसी चीज़ के लिए तैयार न हो जिसका सामना वे कर सकते हैं। यदि वे क्लेश के होने की अपेक्षा करते हैं और इसके बाद वह स्वयं को मसीह विरोधी के शासन के अंतर्गत विश्वव्यापी सताव के मध्य में पाते हैं, तो उन पर भटक जाने की परीक्षा आ सकती है। अच्छा यह होगा कि पवित्रशास्त्र जिसके होने के बारे में कहता है उसके लिए तैयार रहा जाए।

पुन:, यदि आपने पतरस, याकूब या यूहन्ना से यह पूछा होता कि वे यीशु की वापसी की अपेक्षा किस समय के लिए कर सकते हैं, तो वे आपको उन चिन्हों के बारे में बताते, जिसके बारे में यीशु ने उन्हें बताया था जो कि उसके आगमन से पूर्व होंगे। वे क्लेश की अवधि या मसीह विरोधी के उठने से पूर्व उसे देखने की अपेक्षा नहीं करते।

रात्रि में चोर

A Thief in the Night

इस पर ध्यान दें कि यीशु के द्वारा रात्रि में चोर अलंकार का प्रयोग किया जाना जो कि उसके चिन्हों को प्रगट करने के साथ-साथ हुआ कि उसके शिष्य किसी भी तरह से उसकी वापसी से असुरक्षित न रहें। अत: ''रात्रि में चोर'' अलंकार का

80. इन उदाहरणों में दुख उठानेवालों में से एक को उठाने और दूसरे को छोड़ दिये जाने का वास्तव में कोई अर्थ नहीं है, प्राय: इस पर विवाद भी होता है। मुख्य बात यह है कि कुछ मसीह की वापसी के लिए तैयार रहेंगे और कुछ नहीं। उनकी तैयारी ही उनकी अनन्त नियति का निर्धारण करेगी।

प्रयोग सही रूप में यह सिद्ध करने के लिए नहीं किया जा सकता कि किसी को भी इस बारे में *किसी भी तरह का* कोई विचार नहीं रखना चाहिए कि यीशु की वापसी कब होगी।

''प्रभु के दिन'' के बारे में लिखते हुए पौलुस और पतरस दोनों ने ही ''रात्रि में चोर'' अलंकार का प्रयोग किया (देखें 1 थिस्स. 5:2-4, 2पत. 3:10)। उन्होंने इस अलंकार को क्लेश के अन्त पर या उसके अन्त के निकट पर यीशु की रोषपूर्ण वापसी पर रखा। तथापि, पौलुस ने अपने पाठकों को बताया, ''पर हे भाइयो, तुम तो अन्धकार में नहीं हो, कि वह दिन तुम पर चोर की नाई आ पड़े'' (1 थिस्स. 5:4)। उसने यीशु की समीक्षा या अलंकार का यह जानते हुए ठीक-ठीक अर्थ लगाया कि चिन्हों के प्रति सजग रहने वाले और आज्ञाकारिता के साथ यीशु के पीछे चलने वाले अंधकार में नहीं थे, इसी कारण यीशु की वापसी उन्हें आश्चर्य में डालनेवाली नहीं होनी चाहिए। उसके लिए यीशु रात्रि के चोर के समान *नहीं* आएगा। केवल अंधकार में रहनेवाले ही आश्चर्यचकित होंगे, जिसके बारे में यीशु ने सिखाया भी है (प्रका. 3:3 और 16:15 में यीशु द्वारा ''रात्रि में चोर'' वाक्यांश के प्रयोग किये जाने को भी देखें, जहां वह इसका प्रयोग हरमागिदौन युद्ध में अपनी वापसी के संदर्भ में करता है)।

जैतून के उपदेश में, इस संदर्भ पर यीशु ने बार-बार अपने शिष्यों को अपनी वापसी के लिए तैयार रहने को कहा है। उसी के साथ-साथ, उसने उन्हें यह भी बताया कि वे किस तरह से तैयार हो सकते हैं जैसा कि वह अविश्वासयोग्य सेवकों, दस कुंवारियों और तोड़ों के दृष्टांतों के बारे में बताता है और इसके बाद भेड़ों और बकरियों के न्याय के बारे में भी। लगभग सभी में, उसने उन्हें चिताया कि नरक उनकी प्रतीक्षा में है जो उसकी वापसी के लिये तैयार नहीं (देखें मत्ती 24:50-51; 25:30, 41-46)। तैयार होने का तरीका उसकी वापसी पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में पाया जाता है।[81]

अन्य विरोध

Another Objection

कुछ इस आधार पर क्लेश के अन्त पर या क्लेश के अन्त के निकट उठाए जाने का विरोध करते हैं कि बाइबल के अनुसार धर्मियों को अधर्मियों के साथ कभी दण्डित नहीं किया जाता है, जिससे नूह, लूत और मिस्र के इस्राएलियों से प्रमाणित किया गया है।

81. यीशु द्वारा अपने घनिष्ठ शिष्यों को अपनी वापसी के विषय सावधान करने का स्पष्ट रूप में अर्थ उनके तैयार न पाए जाने की संभावना से है। यदि उसने उन्हें पाप के कारण तैयार न रहने पर अनन्त दण्ड के प्रति चिताया तो इससे उनके पाप के कारण अपने उद्धार से वंचित हो जाने की संभावना थी। यह हमें पवित्रता के महत्व के बारे में बताता है, तथा उन लोगों की मूर्खता के बारे में भी जो कहते हैं कि विश्वासियों का उनके उद्धार से वंचित होना असंभव है।

निश्चय ही, हमारे पास यह विश्वास करने का अच्छा कारण है कि क्लेश के सात वर्षों के समय में धर्मी परमेश्वर के क्रोध को नहीं सहेंगे, जो बाइबल की बहुत सी मिसालों और प्रतिज्ञाओं के विरुद्ध होगा (उदाहरण के लिये देखें 1 थिस्स. 1:9-10; 5:86)।

तथापि, यीशु ने क्लेश के बारे में पहले से बताया था कि उस समय धर्मी दुख उठाएंगे। ऐसा परमेश्वर के हाथों से नहीं होगा, बल्कि अधर्मियों के हाथों से मसीहियों को सताव से मुक्त नहीं किया गया है। उनके लिए सताव की प्रतिज्ञा की गई है। सात वर्षों के क्लेश के समय में, बहुत से विश्वासी अपने जीवनों को खो देंगे (देखें मत्ती 29:9; प्रका. 6:9-11; 13:15; 16:5,6; 17:6; 18:24; 19:2)। बहुतों के सिर काट डाले जाएंगे (देखें प्रका. 20:4)।

अत:, यदि किसी भी राष्ट्र में कोई विश्वासी शहीद हुआ है, तो उस पूरे देश को परमेश्वर के क्रोध से कोई भी चीज़ नहीं' बचा सकती। और यदि एक देश में विश्वासी हैं, तो परमेश्वर दुष्टों पर अपने क्रोध को डालते हुए उनकी अपने क्रोध से रक्षा करने में समर्थ है, मूसा के समय में उसने इसे प्रमाणित किया। परमेश्वर ने पड़ोसी मिस्रियों पर एक के बाद एक न्याय को डालते समय इस्राएलियों पर एक भी कुत्ते को भौंकने तक नहीं दिया (देखें निर्ग. 11:7)। इसी तरह से, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में डंक मारनेवाली टिड्डियों के बारे में पढ़ते हैं, जो पांच महीनों तक पृथ्वी भर के दुष्ट लोगों को पीड़ा देती रहेंगी लेकिन उन्हें 1,44000 यहूदी बन्धक सेवकों को पीड़ा देने की अनुमति नहीं दी गई है जिनके माथों पर एक विशेष चिन्ह के रूप में मुहर की जाएगी (देखें प्रका. 9:1-11)।

प्रकाशितवाक्य में उठाया जाना
The Rapture in Revelation

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में हम कहीं भी उठाए जाने के बारे में नहीं पढ़ते हैं, और न ही हम प्रकाशितवाक्य 19 के अतिरिक्त मसीह के किसी भी अन्य प्रगटीकरण को देखते हैं, जबकि वह मसीह विरोधी और हरमगिदौन के युद्ध में उसकी सेना का नाश करने को आएगा। कलीसिया के उठाए जाने के बारे में उस समय में भी नहीं लिखा है। तथापि, उसी समय की अवधि में क्लेश के समय के शहीदों के पुनरुत्थान का वर्णन मिलता है (देखें 20:4)। क्योंकि पौलुस ने लिखा कि मसीह में मृतक मसीह की वापसी पर जी उठेंगे जो कि कलीसिया के उठाए जाने का समय भी है। इसी के साथ साथ जिन अन्य पवित्रशास्त्र के पदों पर हमने पहले विचार किया, इससे हम इस विश्वास की ओर बढ़ते हैं कि प्रकाशितवाक्य 19 और 20 के चित्रण के अनुसार क्लेश के सात वर्षों का अन्त न होने तक कलीसिया का उठाया जाना नहीं होगा।

लेकिन कुछ अन्य विचार भी हैं।

कुछ प्रकाशितवाक्य 6 और 7 में कलीसिया का उठाए जाने को पाते हैं। प्रकाशितवाक्य 6:12-13 में, हम सूर्य के ''कम्बल के सामन काले'' होने और आकश से तारों के गिरने तथा उन दो चिन्हों के बारे में पढ़ते हैं जिनके बारे में यीशु ने कहा कि उसके प्रगट होने और चुने हुओं को एकत्रित करने से पूर्व घटित होंगे (देखें मत्ती 24:29-31)। तत्पश्चात् अध्याय 7 में हम स्वर्ग में प्रत्येक राष्ट्र से एक बड़ी भीड़ के बारे में पढ़ते हैं जो हर एक जाति, कुल और भाषा से है जो, ''बड़े क्लेश में से निकलकर आए हैं'' (7:14)। उनका वर्णन उन शहीदों के रूप में नहीं किया गया है जैसा कि इससे एक अध्याय पहले के शहीदों के बारे में किया गया है (देखें 6:9-11); जिससे हम यह अनुमान लगाते हैं कि इन्हें शहीद होने के बजाय उठाया गया है, ऐसे विश्वासी जिन्हें बड़े क्लेश से *बचाया* गया है।

निश्चय ही यह मानना सही है कि प्रकाशितवाक्य 6:12-13 में चित्रित अंतरिक्षी घटनाओं के शीघ्र पश्चात् ही उठाया जाना होगा, जिसका सरल सा कारण है कि यीशु ने इस बारे में मत्ती 24:29-31 में कहा था। तथापि, हमें कोई भी निर्णात्मक संकेत नहीं दिया गया है कि प्रकाशितवाक्य 6:12-13 की अंतरिक्षी घटनाएं वास्तव में क्लेश के सात वर्षों में होंगी। यदि प्रकाशितवाक्य 6:1-13 में वर्णन की गई घटनाएं शृंखलाबद्ध हैं, और यदि उठाया जाना 6:13 के ठीक बाद होना है; तो इससे हम यह विश्वास करते हैं कि उठाया जाना मसीह विरोधी के प्रगट होने (देंखे 6:1-2), विश्वव्यापी युद्ध (देखें 6:3-4), अकाल (6:5-6) और महामारी के कारण पृथ्वी के एक-चौथाई वन पशुओं के मारे जाने तक नहीं होगा (देखें प्रका. 6:7-8), और बहुतों के शहीद होने तक (देखें प्रका. 6:9-11)। निश्चय ही इन सभी घटनाओं का वर्णन सात वर्षीय क्लेश का अन्त होने से पूर्व हो सकता है, लेकिन उठाए जाने को समापन पर रखते हुए उनका समस्त सात वर्षों की अवधि में भी वर्णन किया जा सकता है।

सात वर्षीय क्लेश के समापन से पूर्व उठाए जाने के विचार को समर्थन देने में सच्चाई यह है कि प्रकाशितवाक्य– प्रकाशितवाक्य 8 के पश्चात् सात न्यायों के दो समूहों का वर्णन करता है: ''तुरही न्याय'' और ''कटोरा न्याय'' इन दो के बाद परमेश्वर के क्रोध के अन्त के बारे में कहा गया है (देखें 15:1); तथापि, कटोरे का न्याय आरम्भ होने से पूर्व यूहन्ना ने आग से मिले हुए कांच का सा एक समुद्र देखा, और जो उस पशु पर और उसके नाम के एक अंक पर जयवन्त हुए थे, उन्हें उस कांच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिये हुए खड़े देखा'' (15:2)। इन विजयी धर्मी जनों को संभवत: उठाया गया है। दूसरी ओर, यह भी संभव है कि शहीद हुए हों पवित्रशास्त्र नहीं बताता। इसके अतिरिक्त, हम नहीं जानते कि वर्णित दृश्य का किसी भी तरह का कोई कालक्रमानुसार संबंध है।

प्रकाशितवाक्य में पाई जानेवाली अन्य सच्चाई जो क्लेश के सात वर्ष पूर्व उठाए

जाने के विचार को समर्थन देती है वह यह है कि: प्रकाशितवाक्य 9:1-12 में वर्णित पांचवें ''तुरही न्याय'' के अवसर पर, हमें बताया गया है कि डंक मारने वाली टिड्डियों को केवल उन्हें पीड़ा देने की अनुमति दी गई है ''जिनके माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं है'' (9:4)। जिन पर इस मुहर के होने के बारे में बताया गया है वे केवल इस्राएल के 144,000 वंशज होंगे (देखें. प्रका. 7:3-8)। अत:, ऐसा लगता है कि सभी विश्वासियों को उस पांचवें तुरही न्याय से पूर्व उठाया जाएगा.; अन्यथा वे डंक मारने वाली टिड्डियों से छुड़ाए न गए होते। इसके अतिरिक्त चूंकि, टिड्डियां लोगों को पांच महीनों तक पीड़ा देती रहेंगी (9:5,10), ऐसा माना जाता है कि उठाया जाना सात वर्षीय क्लेश के समापन से पांच माह पूर्व होगा।

बेशक, इस तर्क के कई कारण हैं। शायद कुछ और भी हैं जिन पर मुहर की गई है और जिनका वर्णन प्रकाशितवाक्य के कथासार में नहीं किया गया है। किसी भी मामले में यह प्रमाणित होता है कि उठाया जाना पांचवें न्याय से पूर्व होना है, यह इस बात का भी संकेत देता है कि विश्वासियों का एक ऐसा समूह होगा जिन्हें डंक मारनेवाली टिड्डियों के छोड़े जाने से पूर्व उठाया *नहीं* जाएगा– 144,000 विशिष्ट रूप से चिन्हित किये गए इस्राएल के वंशज। तौभी, उन्हें परमेश्वर के क्रोध की हानि से बचाया जाएगा।

इस सब का निष्कर्ष क्या है? मैं केवल यह परिणाम निकाल सकता हूं कि उठाया जाना या तो सात वर्षीय क्लेश के अन्त पर या उसके निकट होगा। विश्वासियों को परमेश्वर के क्रोध से पीड़ित होने का भय रखने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि उन्हें गंभीर सताव और संभावित शहादत के लिए तैयार रहने की ज़रूरत है।

क्लेश की अवधि

The Tribulation Period

पवित्रशास्त्र सात वर्षीय क्लेश के बारे में जो सिखाता है आइये उसे और निकटता से देखें। क्लेश की अवधि के रूप में हम सात वर्षों की संख्या तक कैसे पहुंचते हैं? हमें दानिय्येल की पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए, जो कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ-साथ अन्त के समयों के संबध में संभवत: बाइबल की सबसे अधिक प्रगटीकरण की पुस्तक है।

उसकी पुस्तक के नौवें अध्याय में हम पाते हैं कि दानिय्येल अपने कुछ यहूदी साथियों के साथ बाबुल में बंधक था। यिर्मयाह की पुस्तक का अध्ययन करते हुए दानिय्येल ने पाया कि बाबुल में यहूदी बंधुआई की अवधि सत्तर वर्षों की होगी (देखें दानि. 9:2; यिर्म. 25:11-12)। यह जानते हुए कि यह सत्तर वर्ष की अवधि लगभग पूरी हो गई है, दानिय्येल ने अपने लोगों के पापों को स्वीकारते और करुणा की मांग करते हुए प्रार्थना करना आरंभ कर दिया। उसकी प्रार्थना के जवाब में, जिब्राइल स्वर्गदूत

उस पर प्रगट हुआ और मसीह की वापसी तक के क्लेश के समय में इस्राएल के भविष्य को प्रगट किया गया। दानिय्येल 9:24-27 में पाई जाने वाली भविष्यवाणी पवित्रशास्त्र की अद्‌भुत भविष्यवाणियों में से है। मैंने इसे नीचे अपनी टिप्पणी के साथ कोष्ठक में उदधृत किया है:

> तेरे लोगों (इस्राएल) और तेरे पवित्र नगर (यरूशलेम) के लिए सत्तर सप्ताह (इसमें निस्संदेह कई वर्ष आते हैं, जैसा हम बाद में देखेंगे या फिर 490 वर्षों का योग) कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो (संभवत: इस्राएल के पापों की पराकाष्ठा अपने मसीहा को क्रूस पर चढ़ाने की) और पापों का अन्त (संभवत: क्रूस पर मसीह के छुटकारे के कार्य का उल्लेख) और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए। (*इसमें कोई संदेह नहीं,* क्रूस पर यीशु के छुटकारे के कार्य का एक उल्लेख), और युग युग की धार्मिकता प्रगट हो (परमेश्वर के राज्य में यीशु के पृथ्वी पर के शासन का आरम्भ); और दर्शन की बात पर और भविष्यवाणी पर छाप दी जाए (शायद पवित्रशास्त्र के लिखे जाने के अन्त का उल्लेख, या सहस्त्राब्दि पूर्व भविष्यवाणी को पूरा करने के लिये), और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए। (*शायद* सहस्राब्दि मन्दिर की स्थापना का उल्लेख)। सो यह जान और समझ ले, कि यरूशलेम के फिर बसाने की आज्ञा निकलने से लेकर (इस आज्ञा को 445 ई.पू. राजा क्षयर्ष के द्वारा निकाला गया था), अभिषिक्त प्रधान (प्रभु यीशु मसीह) के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर (69सप्ताहों का योग, या 483 वर्ष); चौक और खाई समेत वह नगर के कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा (अर्थात् यरूशलेम का पुनर्निर्माण, जिसका पहले बाबुलवासियों द्वारा नाश कर कर दिया गया था)। और उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर (अर्थात 445 ई.पू. की आज्ञा के पश्चात् 483 वर्ष) अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा। (यीशु को 32 ई. में क्रूसित किया जाएगा, यदि हम यहूदी कैलेण्डर के द्वारा (प्रतिवर्ष 360 दिन) के अनुसार गणना करें), और उसके हाथ कुछ न लगेगा; और आनेवाले प्रधान (मसीह-विरोधी) की प्रजा (रोमी) नगर और पवित्र स्थान को नाश तो करेगी (टाइटस और रोमी सेना द्वारा 70 ई. में यरूशलेम के विनाश का उल्लेख)। परन्तु उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है; तौभी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी; क्योंकि उसका उजड़ जाना निश्चय ठाना गया है। और वह प्रधान (आनेवाला प्रधान– मसीह विरोधी) *एक सप्ताह*

के लिए बहुतों (इस्राएल) के संग दृढ़ वाचा बान्धेगा, परन्तु आधे ही सप्ताह (लगभग साढ़े तीन वर्ष) के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा और कंगूरे पर उजाड़ने वाली घृणित वस्तुएं दिखाई देंगी (जब मसीह विरोधी स्वयं को यरूशलेम के मन्दिर में परमेश्वर कहलवाते हुए स्थापित करेगा; देखें 2 थिस्स. 2:1-4) और निश्चय से ठनी हुई बात के समाप्त होने तक परमेश्वर का क्रोध उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा (यीशु द्वारा मसीह विरोधी को परास्त करना) (दानि. 9:24-27, पर बल दिया गया है)।

490 विशेष वर्ष

490 Special Years

445 ई. पू. में राजा क्षयर्ष की आज्ञा से यरूश्लेम का पुनर्निर्माण करने से लेकर, परमेश्वर ने भावी इतिहास के 490 विशेष वर्ष दिये। लेकिन वे 490 वर्ष अनुक्रमिक नहीं थे; इसके विपरीत, उन्हें 483 वर्ष और सात वर्ष के वर्गों में बांटा गया था। दिये गए 483 वर्ष के पूरे हो जाने पर (जिस वर्ष यीशु को क्रूसित किया गया था), घड़ी रुक गई। दानिय्येल ने संभवत: कभी यह सपने में भी नहीं सोचा होगा कि घड़ी रुक जाएगी जो कि अब लगभग 2000 वर्ष का समय है। भविष्य में कुछ सीमा तक, घड़ी फिर से शुरू हो जाएगी और अन्तिम सात वर्षों तक चलेगी। अन्तिम सात वर्षों का उल्लेख न केवल ''क्लेश'' के रूप में किया गया है, बल्कि ''दानिय्येल के सत्तरवें सप्ताह'' के रूप में भी।

इन सात वर्षों को साढ़े तीन वर्षो को दो अवधियों में बांटा गया है। इसके मध्य में, जैसा हम दानिय्येल की भविष्यवाणी में पढ़ते है, मसीह विरोधी इस्राएल के साथ की गई अपनी वाचा को तोड़ेगा और ''मेलबलि व अन्नबलि को बन्द करेगा।'' इसके बाद, जैसा पौलुस ने हमें बताया है, वह स्वयं को यरूशलेम के मन्दिर में स्थापित करेगा और साथ ही स्वयं को परमेश्वर के रूप में घोषित करेगा।[82] वह वही ''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु'' है जिसके बारे में यीशु ने मत्ती 24:15 में कहा था और उसी कारण से यहूदिया के विश्वासियों को ''पहाड़ों पर भाग जाना'' है (मत्ती 24:16), क्योंकि यह संसार पर आने वाले सबसे भयंकर क्लेश के आरम्भ के चिन्ह के रूप में होगा (देखें मत्ती 24:21)।

''यहूदियों का भाग जाना'' यूहन्ना ने प्रतीकात्मक रूप से दर्शन में देखा था जिसका वर्णन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के बारहवें अध्याय में मिलता है। इस तरह से यहूदिया के विश्वासियों को जंगल में अपने लिए सुरक्षा का एक स्थान मिलेगा जहां पर साढ़े

82. बेशक यह हमें संकेत देता है कि यरूशलेम के मन्दिर को फिर से बनाया जाएगा क्योंकि वर्तमान समय में यरूशलेम में कोई मन्दिर नहीं है (2005 में जब इसे लिखा गया है)।

तीन वर्ष तक उनका ''पोषण'' किया जाएगा जो कि क्लेश के सात वर्षों की शेष अवधि है (देखें प्रका. 12:6, 13-17)। इसी कारण मेरे विचार से मसीह विरोधी द्वारा यरूशलेम में अपने को ईश्वर घोषित किये जाने पर संसार भर के सभी विश्वासियों के सुरक्षा के लिए किसी पिछड़े स्थान पर भाग जाने का विचार अच्छा है।

दानिय्येल का अन्तिम प्रकाशन

Daniel's Last Revelation

दानिय्येल की पुस्तक का एक अन्य रोचक परिच्छेद जिस पर हमने अभी तक विचार नहीं किया उसकी अद्‌भुत पुस्तक के अन्तिम तेरह पदों में पाया जाता है। वे एक स्वर्गदूत द्वारा दानिय्येल को बोले गए शब्द हैं। मैंने इन्हें नीचे कोष्ठक में दी गई अपनी टिप्पणियों के साथ उद्‌धृत किया है:

> उसी समय मीकाएल (एक स्वर्गदूत) नाम बड़ा प्रधान जो तेरे जाति भाइयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा। तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अंत तक कभी न हुआ होगा (यह वही संकट होगा जिसके बारे में यीशु मत्ती 24:21 में बोला था); परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे (यह यहूदियों के भाग जाने या उठाये जाने के समय में विश्वासियों के बचाये जाने के संदर्भ में हो सकता है), और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उनमें से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यंत घिनौने ठहरने के लिये (धर्मियों और दुष्टों का पुनरुत्थान)। तब सिखानेवालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों की नाईं प्रकाशमान रहेंगे। (अपने पुनरुत्थान के बाद धर्मी नई देह प्राप्त करेंगे जो कि परमेश्वर की महिमा के कारण चमकेगी)। परन्तु हे दानिय्येल, तू इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को अन्त समय तक के लिये बन्द रख और बहुत लोग, पूछ-ताछ और ढूंढ-ढांढ करेंगे, और इससे ज्ञान बढ़ भी जाएगा। (पिछली शताब्दी से यातायात और ज्ञान की बढ़ोत्तरी इस भविष्यवाणी को पूर्ण करती प्रतीत होती है,)।
>
> यह सब सुन, मुझ दानिय्येल ने दृष्टि करके क्या देखा कि और दो पुरुष खड़े हैं, एक तो नदी के इस तीर पर और दूसरा नदी के उस तीर पर है। तब जो पुरुष सन का वस्त्र पहने हुए नदी

के जल के ऊपर था, उससे उन पुरुषों में से एक ने पूछा, इन आश्चर्यकर्मों का अन्त कब तक होगा? तब जो पुरुष सन का वस्त्र पहने हुए नदी के जल के ऊपर था, उसने मेरे सुनते दहिना और बांया अपने दोनों हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, सदा जीवित रहनेवाले की शपथ खाकर कहा, यह दशा साढ़े तीन काल तक ही रहेगी (प्रका. 12:6 और 12:14 के अनुसार साढ़े तीन वर्ष प्रकाशन का अर्थ निकालता है); और जब पवित्र प्रजा की शक्ति टूटते टूटते समाप्त हो जाएगी, तब ये सब बातें पूरी होंगी। (जैसा दानिय्येल 7:25 हमें बताता है कि धर्मी जनों को साढ़े तीन वर्ष तक मसीह विरोधी के हाथों सौंप में दिया जाएगा, यहां हमें यह संभव लगता है कि वे क्लेश के सात वर्षों के अन्तिम साढ़े तीन वर्ष हैं। स्वर्गदूत द्वारा बताई गई सभी घटनाओं का अन्त उस समय होगा जब ''पवित्र लोगों की शक्ति'' को ''हिलाया'' जाएगा) यह बात मैं सुनता तो था परन्तु कुछ न समझा। तब मैंने कहा, ''हे मेरे प्रभु, इन बातों का अन्त फल क्या होगा?'' उसने कहा, ''हे दानिय्येल, चला जा; क्योंकि ये बातें अन्त समय के लिये बन्द हैं और इन पर मुहर दी हुई है। बहुत लोग तो अपने को निर्मल और उजले करेंगे, और स्वच्छ हो जाएंगे (निस्संदेह, क्लेश के द्वारा); परन्तु दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे; और दुष्टों में से कोई ये बातें न समझेगा परन्तु जो बुद्धिमान हैं वे ही समझेंगे और जब से नित्य होमबलि उठाई जाएगी और वह घिनौनी वस्तु जो उजाड़ करा देती है, स्थापित की जाएगी, तब से बारह सौ नब्बे दिन बीतेंगे (इसका उन दो घटनाओं के *बीच* के समय के रूप में अर्थ नहीं लगाना चाहिए क्योंकि उन दोनों को सात वर्षों के बीच में ही घटना है। इसके विपरीत इसका अर्थ यह लगाया जाना चाहिए कि उन दो घटनाओं के होने के समय से लेकर अन्त के समय में कुछ महत्वपूर्ण घटित होने पर ये 1290 दिन होंगे। 1290 दिन 360 दिनों के वर्ष के हिसाब से साढ़े तीन वर्ष से 30 दिन का अधिक समय बनता है, एक ऐसी समय अवधि जिसका दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य के भविष्यसूचक पदों में बार बार वर्णन किया गया है। इन अतिरिक्त 30 दिनों का जोड़ा जाना चिन्तन करने का एक अलग विषय है। इसमें और रहस्य जोड़ते हुए स्वर्गदूत दानिय्येल को आगे बताता है:) क्या ही धन्य है वह जो धीरज धरकर तेरह सौ पैंतीस दिन के अन्त तक भी पहुंचे! (अत: अब हमारे पास रहस्य के अन्य 45 दिन भी हैं।) अब तू जाकर अन्त तक ठहरा रह; और तू विश्राम

> करता रहेगा (दानिय्येल के लिए प्रतिज्ञात् पुनरुत्थान) और उन दिनों के अन्त में तू अपने निज भाग पर खड़ा होगा'' (दानि. 12:1-13)।

निस्संदेह उन 75 दिनों के अन्त में कुछ अद्‌भुत घटना घटेगी! इसके लिए हम सभी को प्रतीक्षा करनी होगी।

प्रकाशितवाक्य के अन्तिम अध्यायों का अध्ययन करने से हम जान पाते हैं कि मसीह की वापसी के पश्चात् अन्य कई घटनाओं का भी उसके साथ-साथ होना ज़रूरी है, जिनमें से एक ''मेम्ने का ब्याह भोज' है, जिसके बारे में एक स्वर्गदूत ने यूहन्ना को बताया, ''धन्य वे हैं, जो मेम्ने के ब्याह भोज में बुलाए गए हैं'' (प्रका. 19:9)। शायद यह वही आशीष है जिसके बारे में स्वर्गदूत ने दानिप्येल को बताया था। अत: वह महिमायी भोज यीशु की वापसी के लगभग ढाई माह पश्चात् होगा।

शायद वे पचहत्तर दिन अन्य चीज़ों से भरे हैं जिनके बारे में हम जानते हैं कि वे प्रकाशितवाक्य के अन्तिम अध्यायों के अनुसार होंगी, जैसे– मसीह विरोधी और झूठे भविष्यवक्ता का आग की झील में डाला जाना, शैतान का बांधा जाना और मसीह के विश्वव्यापी राज्य की स्थापना (देखें प्रका. 19:20-20:4)।

सहस्राब्दि
The Millennium

सहस्राब्दि शब्द उस समय से संबन्धित है जब यीशु व्यक्तिगत रूप से पूरी पृथ्वी पर हज़ार वर्ष की अवधि के लिए राज्य करेगा (देखें प्रका. 20:3, 5,7), जो क्लेश के सात वर्षों के बाद होना है। यशायाह ने लगभग 3000 वर्ष पूर्व पृथ्वी पर मसीह के शासन को देख लिया था।

> क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और *प्रभुता उसके कांधे पर होगी;* और उसका नाम . ....शांति का राजकुमार रखा जाएगा। *उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा,* इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म द्वारा स्थिर किये और संभाले रहेगा (यशा. 9:6-7, पर बल दिया गया है)।

इसी तरह से जिब्राइल स्वर्गदूत ने मरिमय पर यह घोषित किया कि उसका पुत्र एक अविनाशी राज्य पर शासन करेगा:

> स्वर्गदूत ने उससे कहा, ''हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख, तू गर्भवती होगी,

> और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा, *और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा''* (लूका 1:30-33, पर बल दिया गया है)।[83]

सहस्राब्दि समय में, यीशु व्यक्तिगत रूप से यरूशलेम के सिय्योन पर्वत से राज्य करेगा, जिसे अपनी वर्तमान समय की ऊंचाई से अधिक ऊँचा किया जाएगा। उसका शासन सभी जातियों अथवा राष्ट्रों के लिए एक सिद्ध शासन होगा और समस्त पृथ्वी पर शांति होगी:

> अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे, और बहुत देशों के लोग आएंगे और आपस में कहेंगे ''आओ हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा, वह जाति-जाति का न्याय करेगा, और देश-देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा; और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे (यशा. 2:2-4)।

जकर्याह ने भी यही भविष्यवाणी की थी:

> सेनाओं का यहोवा यों कहता हैं, मैं सिय्योन में लौट आया हूं, और यरूश्लेम के बीच में वास किये रहूंगा, और यरूशलेम सच्चाई का नगर कहलाएगा, और सेनाओं के यहोवा का पर्वत, पवित्र पर्वत कहलाएगा.. सेनाओं का यहोवा यों कहता है, ''ऐसा समय आनेवाला है कि देश देश के लोग और बहुत नगरों के रहनेवाले आएंगे। और एक नगर के रहनेवाले दूसरे नगर के रहनेवालों के पास जाकर कहेंगे, 'यहोवा से विनती करने और सेनाओं के यहोवा

83. यह पद बताता है कि पवित्रशास्त्र जो कहता है उसका भविष्यसूचक घटनाओं के समय के होने के विषय गलत अर्थ लगाना सरल हो सकता है। मरियम आसानी से यह मान सकती थी कि उसका विशिष्ट पुत्र कुछ दशकों के बाद दाऊद के सिंहासन पर राज्य करेगा। इससे ऐसा लगता है कि यीशु का जन्म और उसका राज्य करना समान ही घटनाएं हैं। मरियम ने इसके बीच 2000 वर्ष के अन्तर की कभी कल्पना भी नहीं की होगी। भविष्यवाणी से संबन्धित पदों की व्याख्या करने का प्रयास करते हुए हमें इन समान धारणाओं के प्रति सतर्क रहना चाहिए।

> को ढूंढने के लिए चलो; मैं भी चलूंगा।' बहुत से देशों के वरन सामर्थी जातियों के लोग, यरूशलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूंढने और यहोवा से विनती करने के लिये आएंगे।'' सेनाओं का यहोवा यों कहता है ''उन दिनों में भांति-भांति की भाषा बोलने वाली सब जातियों में से दस मनुष्य एक यहूदी पुरुष के वस्त्र की छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे, कि 'हम तुम्हारे संग चलेंगे, क्योंकि हमने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ हैं'' (जक. 8:2-3, 20-23)।

बाइबल सिखाती है कि विश्वासी उन दिनों हज़ार वर्ष के समय में वास्तव में मसीह के साथ राज्य व शासन कर रहे होंगे। उसके राज्य में उनके उत्तरदायित्व का मानदण्ड इस समय की उनकी विश्वासयोग्यता पर आधारित होगा (देखें दानि. 7:27; लूका 19:12-27; 1कुरि. 6:1-3; प्रका. 6:26-27; 5:9-10; और 22:3-5)।

हम अपनी पुनरुत्थित देह के वस्त्र धारण करेंगे, लेकिन उस समय अपने नश्वर देह में रहनेवाले स्वाभाविक लोग भी होंगे जो उस समय पृथ्वी की संख्या में बढ़ोत्तरी करेंगे। इसके अतिरिक्त, ऐसा लगता है कि पितरों की दीर्घायु को सुरक्षित रखा जाएगा और जंगली जानवरों की क्रूरता समाप्त हो जाएगी:

> मैं आप यरूशलेम के कारण मगन और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा; उस में फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा; उसमें फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा और न ऐसा बूढ़ा जाता रहेगा जिसने अपनी आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो लड़कपन में मरनेवाला है वह सौ वर्ष का होकर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर शापित ठहरेगा... भेड़िया और मेम्ना एक संग चरा करेंगे, और सिंह बैल की नाईं भूसा खाएगा; और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुख देगा और न कोई किसी की हानि करेगा (यशा. 65:19-20, 25; यशा. 11:6-9 भी देखें)।

भावी सहस्राब्दि के संबंध में बाइबल में कई संदर्भ दिए गए हैं। अतिरिक्त अध्ययन के लिए देखें; यशा 11:6-16; 25:1-12; 35:1-10; यिर्म. 23:1-5; योएल 2:30-3: 21; आमोस 9:11-15; मीका 4:1-7; सप 3:14-20; जक. 14: 9-21; और प्रका. 20:1-6

बहुत से भजन भी भविष्यवाणी के रूप में सहस्राब्दि पर लागू होते हैं। उदाहरण के लिये, भजन संहिता 48 के इस परिच्छेद को पढ़ें:

> *हमारे परमेश्वर के नगर में और अपने पवित्र पर्वत पर* यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है। *सिय्योन पर्वत ऊँचाई में सुन्दर और*

> *सारी पृथ्वी के हर्ष का कारण है, राजाधिराज का नगर उत्तरीय सिरे पर है। उसके महलों में परमेश्वर ऊँचा गढ़ माना गया है।* क्योंकि देखो राजा लोग इकट्ठे हुए, वे एक संग आगे बढ़ गए। उन्होंने आप ही देखा और देखते ही विस्मित हुए, वे घबराकर भाग गए। वहां कंपकपी ने उनको आ पकड़ा और जच्चा की सी पीड़ाएं उन्हें होने लगीं (भजन. 48:1-6, पर बल दिया गया है)।

जब यीशु सहस्राब्दि के आरम्भ में अपने प्रबन्ध को स्थापित करता है, उसी के साथ-साथ पृथ्वी के बहुत से शासक जो क्लेश के समय से बचेंगे, यीशु के शासन की रिपोर्ट को सुनने के साथ-साथ स्वयं इसे देखने के लिए यात्रा करेंगे। इसे देखकर वे अचम्भे में पड़ जाएंगे।[84]

मसीह के सहस्राब्दि शासन के संबंध में बताए गए अन्य भजनों के लिए, देखें भजन. 2:1-12; 24:1-10; 47:1-9; 66:1-7; 68:15-17; 99:1-9 और 100:1-5

अनन्त अवस्था

The Eternal State

सहस्राब्दि के अन्त को अधिकांश बाइबल विद्वान ''अनन्त अवस्था'' के रूप में मानते हैं, जिसका आरम्भ नये स्वर्ग और नई पृथ्वी से होता है। 1कुरिन्थियों 15:24-28 के अनुसार, यीशु प्रत्येक चीज़ को पिता को सौंप देगा:

> इसके बाद अन्त होगा; उस समय वह (यीशु) सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। क्योंकि जब तक वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है। क्योंकि ''परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है'' (भजन. 8:6)। परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके आधीन कर दिया गया है तो प्रत्यक्ष है, कि जिस ने (परमेश्वर ने) सब कुछ उसके आधीन कर दिया, वह आप अलग रहा। और जब सब कुछ उसके (पिता) आधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके आधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।

शैतान, जिसे हज़ार वर्ष के समय के लिये बांधा गया था, उसे सहस्राब्दि के अन्त में छोड़ा जाएगा। तब वह उन्हें धोखा देगा जो भीतर से यीशु के प्रति विद्रोही हैं परन्तु

84. दूसरे पदों की ओर देखने पर ऐसा लगता है कि सहस्राब्दि का आरंभ न केवल पृथ्वी पर रहनेवाले विश्वासियों के साथ होगा बल्कि अविश्वासियों के साथ भी (देखें यशा. 2:1-5; 60:15; दानि. 7:13-14)।

उसके प्रति आज्ञाकारी होने का पाखण्ड करते हैं (देखें भजन. 66:3)।

परमेश्वर लोगों के मनों की सही दशा को प्रगट करने के लिए शैतान को उन लोगों को धोखा देने की अनुमति देगा जिससे उनका सही तरह से न्याय हो सके। उसके धोखे में आकर वे पवित्र नगर यरूशलेम पर हमला करने को इकट्ठे होंगे, ताकि यीशु के शासन को उखाड़ फेंकें। युद्ध अधिक समय तक नहीं चलेगा क्योंकि सेना को समाप्त करने के लिए आग आकाश (स्वर्ग) से आएगी और शैतान को स्थायी रूप से आग व गंधक की झील में डाल दिया जाएगा (देखें प्रका. 20:7-10)।

भजन संहिता 2 में भविष्य में युद्ध के लिए एकत्रित होने के बारे में बताया गया है:

> जाति-जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं, और देश-देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोच रहे हैं? यहोवा के और उसके अभिषिक्त (मसीह) के विरुद्ध पृथ्वी के राजा मिलकर और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं, कि "आओ, हम उनके बंधन तोड़ डालें, और उनकी रस्सियों को अपने ऊपर से उतार फेंकें।" वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हंसेगा, प्रभु उनको ठट्ठों में उड़ाएगा। तब वह उनसे क्रोध करके बातें करेगा और क्रोध में कहकर उन्हें घबरा देगा कि, "मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर बैठा चुका हूं।" (यीशु अब कहता है) मैं उस वचन का प्रचार करूंगा; जो यहोवा ने मुझ से कहा, 'तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ। मुझसे मांग और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिए और दूर-दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनाने के लिये दे दूंगा। तू उन्हें लोहे के डण्डे से टुकड़े टुकड़े करेगा, तू कुम्हार के बर्तन की नाईं उन्हें चकनाचूर कर डालेगा।' इसलिए अब, हे राजाओ, बुद्धिमान बनो; हे पृथ्वी के न्यायियों, यह उपदेश ग्रहण करो, डरते हुए यहोवा की उपासना करो, और कांपते हुए मग्न हो। पुत्र को चूमो ऐसा न हो कि वह क्रोध करे, और तुम मार्ग ही में नाश हो जाओ; क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भड़कने को है। धन्य हैं वे जिनका भरोसा उस पर है।

एक अंन्तिम न्याय
A Final Judgment

अन्तिम अवस्था से कुछ पहले ही, अन्तिम न्याय होगा। सभी युगों के सभी अधर्मी परमेश्वर के सिंहासन के सम्मुख खड़े होने को देह सहित जी उठेंगे और उनके कार्यों

के अनुसार उनका न्याय होगा (देखें प्रका. 20:5, 11-15)। हर कोई जो इस समय अधोलोक में है उस न्याय के सम्मुख लाया जाएगा, जिसका उल्लेख ''महान श्वेत सिंहासन'' के रूप में किया गया है, और इसके बाद उन्हें गेहेना-आग की झील-में डाल दिया जाएगा। इसका उल्लेख ''दूसरी मृत्यु'' के रूप में किया गया है (प्रका. 20:14)।

अन्तिम अवस्था का आरम्भ प्रथम आकाश और पृथ्वी के जाते रहने से होता है, यीशु की दो हज़ार वर्ष पूर्व की प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए ''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी'' (मत्ती 24:35)।

इसके बाद परमेश्वर एक नये आकाश और पृथ्वी की रचना करेगा जैसा पतरस ने अपनी दूसरी पत्री में पहले से बताया है:

> परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे। जबकि ये सब वस्तुएं, इस रीति से पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए। और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिए कैसा यत्न करना चाहिए; जिसके कारण आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे। पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नये आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी। (2 पत. 3:10-14; यशा. 65:17-18 भी देखें)।

अन्त में, नया यरूशलेम आकाश से पृथ्वी पर उतरेगा (देखें प्रका. 21:1-2)। हमारे मन उस शहर की महिमा को कठिनाई से ही लेना आरम्भ कर सकते हैं जो कि युनाईटेड स्टेट के आधे क्षेत्र के बराबर का है (देखें प्रका. 21:16), या फिर उस कभी न समाप्त होने वाले युग के आश्चर्य को। हम सदा के लिए एक सिद्ध समाज में रह रहे होंगे जो कि परमेश्वर के शासन में यीशु मसीह को महिमा देनेवाला होगा।